# विलापगीत

### अपने विनाश पर यरूशलेम का विलाप

1 एक समय वह था जब यरूशलेम में लोगों की भीड़ थी। किन्तु आज वही नगरी उजाड़ पड़ी हुई हैं! एक समय वह था जब देशों के मध्य यरूशलेम महान नगरी थी! किन्तु आज वही ऐसी हो गयी है जैसी कोई विधवा होती है! वह समय था जब नगरियों के बीच वह एक राजकुमारी सी दिखती थी। किन्तु आज वही नगरी दासी बना दी गयी है।

2रात में वह बुरी तरह रोती है और उसके अश्रु गालों पर टिके हुए है! उसके पास कोई नहीं है जो उसको ढांढस दे। उसके मित्र देशों में कोई ऐसा देश नहीं है जो उसको चैन दे। उसके सभी मित्रों ने उससे मुख फेर लिया। उसके मित्र उसके शत्रु बन गये।

3बहुत कष्ट सहने के बाद यहूदा बंधुआ बन गयी। बहुत मेहनत के बाद भी यहूदा दूसरे देशों के बीच रहती है, किन्तु उसने विश्राम नहीं पाया है। जो लोग उसके पीछे पड़े थे, उन्होंने उसको पकड़ लिया। उन्होंने उसको संकरी घाटियों के बीच में पकड़ लिया।

4सिय्योन की राहें बहुत दुःख से भरी हैं। वे बहुत दुःखी हैं क्योंकि अब उत्सव के दिनों के हेतु कोई भी व्यक्ति सिय्योन पर नहीं जाता है। सिय्योन के सारे द्वार नष्ट कर दिये गये है। सिय्योन के सब याजक दहाड़ें मारते हैं। सिय्योन की सभी युवा स्त्रियां उससे छीन ली गयी हैं और यह सब कुछ सिय्योन का गहरा दुःख है।

5यरूशलेम के शत्रु विजयी हैं। उसके शत्रु सफल हो गये हैं, ये सब इसलिये हो गया क्योंकि यहोवा ने उसको दण्ड दिया। उसने यरूशलेम के अनगिनत पापों के लिये उसे दण्ड दिया। उसकी संताने उसे छोड़ गयी। वे उनके शत्रुओं के बन्धन मे पड़ गये।

6सिय्योन की पुत्री की सुंदरता जाती रही है। उसकी राजकन्याएं दीन हरिणी सी हुई। वे वैसी हरिणी थीं जिनके पास चरने को चरागाह नहीं होती। बिना किसी शक्ति के वे इधर–उधर भागती हैं। वे ऐसे उन व्यक्तियों से बचती इधर–उधर फिरती हैं जो उनके पीछे पड़े हैं।

7यरूशलेम बीती बात सोचा करती है, उन दिनों की बातें जब उस पर प्रहार हुआ था और वह बेघर–बार हुई थी। उसे बीते दिनों के सुख याद आती थीं। वे पुराने दिनों में जो अच्छी वस्तुएं उसके पास थीं, उसे याद आती थीं। वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसके लोग शत्रुओं के द्वारा बंदी किये गये। वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसे सहारा देने को कोई भी व्यक्ति नहीं था। जब शत्रु उसे देखते थे, वे उसकी हंसी उड़ाते थे। वे उसकी हंसी उड़ाते थे क्योंकि वह उजड़ चुकी थी।

8यरूशलेम ने गहन पाप किये थे। उसने पाप किये थे कि जिससे वह ऐसी वस्तु हो गई कि जिस पर लोग अपना सिर नचाते थे। वे सभी लोग उसको जो मान देते थे, अब उससे घृणा करने लगे। वे उससे घृणा करने लगे क्योंकि उन्होंने उसे नंगा देख लिया है। यरूशलेम दहाड़े मारती है और वह मुख फेर लेती है।

9यरूशलेम के वस्त्र गंदे थे। उसने नहीं सोचा था कि उसके साथ क्या कुछ घटेगा। उसका पतन विचित्र था, उसके पास कोई नहीं था जो उसको शांति देता। वह कहा करती है, "हे यहोवा, देख मैं कितनी दुःखी हूँ! देख मेरा शत्रु कैसा सोच रहा है कि वह कितना महान है!"

10शत्रु ने हाथ बढ़ाया और उसकी सब उत्तम वस्तु लूट लीं। दरअसल उसने वे पराये देश उसके पवित्र स्थान में भीतर प्रवेश करते हुये देखे। हे यहोवा, यह आज्ञा तूने ही दी थी कि वे लोग तेरी सभा में प्रवेश नहीं करेंगे!

11यरूशलेम के सभी लोग कराह रहे हैं, उसके सभी लोग खाने की खोज में है। वे खाना जुटाने को अपने मूल्यवान वस्तुयें बेच रहे हैं। वे ऐसा करते हैं ताकि उनका जीवन बना रहे। यरूशलेम कहता है, "देख यहोवा, तू मुझको देख! देख, लोग मुझको कैसे घृणा करते है।

12मार्ग से होते हुए जब तुम सभी लोग मेरे पास से गुजरते हो तो ऐसा लगता है जैसे ध्यान नहीं देते हो। किन्तु मुझ पर दृष्टि डालो और जरा देखो, क्या कोई ऐसी पीड़ा है जैसी पीड़ा मुझको है? क्या ऐसा कोई दुःख है जैसा दुःख मुझ पर पड़ा है? क्या ऐसा कोई कष्ट है जैसे कष्ट का दण्ड यहोवा ने मुझे दिया है? उसने अपने कठिन क्रोध के दिन पर मुझको दण्डित किया है।

13यहोवा ने ऊपर से आग को भेज दिया और वह आग मेरी हड्डियों के भीतर उतरी। उसने मेरे पैरों के

लिये एक फंदा फेंका। उसने मुझे दूसरी दिशा में मोड़ दिया है। उसने मुझे वीरान कर डाला है। सारे दिन मैं रोती रहती हूँ।

14“मेरे पाप मुझ पर जुए के समान कसे गये। यहोवा के हाथों द्वारा मेरे पाप मुझ पर कसे गये। यहोवा का जुआ मेरे कन्धों पर है। यहोवा ने मुझे दुर्बल बना दिया है। यहोवा ने मुझे उन लोगों को सौंपा जिनके सामने मैं खड़ी नहीं हो सकती।

15“यहोवा ने मेरे सभी वीर योद्धा नकार दिये। वे वीर योद्धा नगर के भीतर थे। यहोवा ने मेरे विरुद्ध में फिर एक भीड़ भेजी, वह मेरे युवा सैनिक को मरवाने उन लोगों को लाया था। यहोवा ने मेरे अंगूर गरठ में कुचल दिये। वह गरठ यरूशलेम की कुमारियों का होता था।

16“इन सभी बातों को लेकर मैं चिल्लाई। मेरे नयन जल में डूब गये। मेरे पास कोई नहीं मुझे चैन देने। मेरे पास कोई नहीं जो मुझे थोड़ी सी शांति दे। मेरे संताने ऐसी बनी जैसे उजाड़ होता है। वे ऐसे इसलिये हुआ कि शत्रु जीत गया था।”

17सिय्योन अपने हाथ फैलाये हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उसको चैन देता। यहोवा ने याकूब के शत्रुओं को आज्ञा दी थी। यहोवा ने उसे घेर लेने की आज्ञा दी थी। यरूशलेम ऐसी हो गई जैसी कोई अपवित्र वस्तु थी।

18यरूशलेम कहा करती है, “यहोवा तो न्यायशील है क्योंकि मैंने ही उस पर कान देना नकारा था। सो, हे सभी व्यक्तियों, सुनो! तुम मेरा कष्ट देखो! मेरे युवा स्त्री और पुरुष बंधुआ बना कर पकड़े गये हैं।

19मैंने अपने प्रेमियों को पुकारा। किन्तु वे आँखें बचा कर चले गये। मेरे याजक और बुजुर्ग मेरे नगर में मर गये। वे अपने लिये भोजन को तरसते थे। वे चाहते थे कि वे जीवित रहें।

20“हे यहोवा, मुझे देख। मैं दुःख में पड़ी हूँ! मेरा अंतरंग बेचैन है! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा हृदय उलट–पलट गया हो! मुझे मेरे मन में ऐसा लगता है क्योंकि मैं हठी रही थी! गलियों में मेरे बच्चों को तलवार ने काट डाला है। घरों के भीतर मौत का वास था।

21“मेरी सुन, क्योंकि मैं कराह रही हूँ! मेरे पास कोई नहीं है जो मुझको चैन दे, मेरे सब शत्रुओं ने मेरी दुःखों की बात सुन ली है। वे बहुत प्रसन्न हैं। वे बहुत ही प्रसन्न हैं क्योंकि तूने मेरे साथ ऐसा किया। अब उस दिन को ले आ जिसकी तूने घोषणा की थी। उस दिन तू मेरे शत्रुओं को वैसा ही बना दे जैसी मैं अब हूँ।

22“मेरे शत्रुओं का बंदी तू अपने सामने आने दे। फिर उनके साथ तू वैसा ही करेगा जैसा मेरे पापों के बदले में तूने मेरे साथ किया। ऐसा कर क्योंकि मैं बार बार कराह रहा। ऐसा कर क्योंकि मेरा हृदय दुर्बल है।”

## यहोवा द्वारा यरूशलेम का विनाश

2 देखों यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को कैसे बादल से ढक दिया है। उसने इस्राएल की महिमा आकाश से धरती पर फेंक दी। यहोवा ने उसे याद तक नहीं रखा कि सिय्योन अपने क्रोध के दिन पर उसके चरणों की चौकी हुआ करता था।

2यहोवा ने याकूब के भवन निगल लिये। वह दया से रहित होकर उसको निगल गया। उसने यहूदा की पुत्री के गढ़ियों को भर क्रोध में मिटाया। यहोवा ने यहूदा के राजा को गिरा दिया; और यहूदा के राज्य को धरती पर पटक दिया। उसने राज्य को बर्बाद कर दिया।

3यहोवा ने क्रोध में भर कर के इस्राएल की सारी शक्ति उखाड़ फेंकी। उसने इस्राएल के ऊपर से अपने दाहिना हाथ उठा लिया है। उसने ऐसा उस घड़ी में किया था जब शत्रु उस पर चढा था। वह याकूब में धधकती हुई आग सा भड़की। वह एक ऐसी आग थी जो आस–पास का सब कुछ चट कर जाती है।

4यहोवा ने शत्रु के समान अपना धनुष खेंचा था। उसके दाहिने हाथ में उसके तलवार का मुटठा था। उसने यहूदा के सभी सुन्दर पुरुष मार डाले। यहोवा ने उन्हें मार दिया मानों जैसे वे शत्रु हों। यहोवा ने अपने क्रोध को बरसाया। यहोवा ने सिय्योन के तम्बुओं पर उसको उडेंल दिया जैसे वह आग हो।

5यहोवा शत्रु हो गया था और उसने इस्राएल को निगल लिया। उसकी सभी महलों को उसने निगल लिया उसके सभी गढ़ियो को उसने निगल लिया था। यहूदा की पुत्री के भीतर मरे हुए लोगों के हेतु उसने हाहाकार और शोक मचा दिया।

6यहोवा ने अपना ही मन्दिर नष्ट किया था जैसे वह कोई उपवन हो, उसने उस ठांव को नष्ट किया जहाँ लोग उसकी उपासना करने के लिये मिला करते थे। यहोवा ने लोगों को ऐसा बना दिया कि वे सिय्योन में विशेष सभाओं को और विश्राम के विशेष दिनों को भूल जायें। यहोवा ने याजक और राजा को नकार दिया। उसने बड़े क्रोध में भर कर उन्हें नकारा।

7यहोवा ने अपनी ही वेदी को नकार दिया और उसने अपना उपासना का पवित्र स्थान को नकार दिया था। यरूशलेम केमहलों की दिवारें उसने शत्रु को सौंप दी। यहोवा के मन्दिर में शत्रु शोर कर रहा था। वे ऐसे शोर करते थे जैसे कोई छुट्टी का दिन हो।

8उसने सिय्योन की पुत्री का परकोटा नष्ट करना सोचा है। उसने किसी नापने की डोरी से उस पर निशान डाला था। उसने स्वयं को विनाश से रोका नहीं। इसलिये उसने दुःख में भर कर के बाहरी फसीलों

को और दूसरे नगर के परकोटों को रूला दिया था। वे दोनों ही साथ–साथ व्यर्थ हो गयीं।

9यरूशलेम के दरवाज़े टूट कर धरती पर बैठ गये। द्वार के सलाखों को तोड़कर उसने तहस–नहस कर दिया। उसके ही राजा और उसकी राजकुमारियाँ आज दूसरे लोगों के बीच है। उनके लिये आज कोई शिक्षा ही नहीं रही। यरूशलेम के नबी भी यहोवा से कोई दिव्य दर्शन नहीं पाते।

10सिय्योन के बुज़ुर्ग अब धरती पर बैठते हैं। वे धरती पर बैठते हैं और चुप रहते हैं। अपने माथों पर धूल मलते हैं और शोक वस्त्र पहनते हैं। यरूशलेम की युवतियाँ दु:ख में अपनी माथा धरती पर नवाती हैं।

11मेरे नयन आँसुओं से दुख रहे हैं! मेरा अंतरंग व्याकुल है! मेरे मन को ऐसा लगता है जैसे वह बाहर निकल कर धरती पर गिरा हो! मुझको इसलिये ऐसा लगता है कि मेरे अपने लोग नष्ट हुए हैं। सन्तानें और शिशु मूर्छित हो रहें हैं। वे नगर के गलियों और बाज़ारों में मूर्छित पड़े हैं।

12वे बच्चे बिलखते हुए अपनी माँओं से पूछते हैं, "कहाँ है माँ, कुछ खाने को और पीने को?" वे यह प्रश्न ऐसे पूछते हैं जैसे जख़्मी सिपाही नगर के गलियों में गिरते प्राणों को त्यागते, वे यह प्रश्न पूछते हैं। वे अपनी माँओं की गोद में लेटे हुए प्राणों को त्यागते हैं।

13हे सिय्योन की पुत्री, मैं किससे तेरी तुलना करूँ? तुझको किसके समान कहूँ? हे सिय्योन की कुँवारी कन्या, तुझको किससे तुलना करूँ? तुझे कैसे ढांढस बंधाऊँ? तेरा विनाश सागर सा विस्तृत है! ऐसा कोई भी नहीं जो तेरा उपचार करें।

14तेरे नबियों ने तेरे लिये दिव्य दर्शन लिये थे। किन्तु वे सभी व्यर्थ झूठे सिद्ध हुए। तेरे पापों के विरुद्ध उन्होंने उपदेश नहीं दिये। उन्होंने बातों को सुधारने का जतन नहीं किया। उन्होंने तेरे लिये उपदेशों का सन्देश दिया, किन्तु वे झूठे सन्देश थे। तुझे उनसे मूर्ख बनाया गया।

15बटोही राह से गुजरते हुए स्तब्ध होकर तुझ पर ताली बजाते हैं। यरूशलेम की पुत्री पर वे सीटियाँ बजाते और माथा नचाते हैं। वे लोग पूछते हैं, "क्या यही वह नगरी है जिसे लोग कहा करते थे, 'एक सम्पूर्ण सुन्दर नगर' तथा 'सारे संसार का आनन्द'?"

16तेरे सभी शत्रु तुझ पर अपना मुँह खोलते हैं। तुझ पर सीटियाँ बजाते हैं और तुझ पर दाँत पीसते हैं। वे कहा करते है, "हमने उनको निगल लिया! सचमुच यही वह दिन है जिसकी हमको प्रतीक्षा थी। आखिरकार हमने इसे घटते हुए देख लिया।"

17यहोवा ने वैसा ही किया जैसी उसकी योजना थी। उसने वैसा ही किया जैसा उसने करने के लिये कहा था। बहुत–बहुत दिनों पहले जैसा उसने आदेश दिया था, वैसा ही कर दिया। उसने बर्बाद किया, उसको दया तक नहीं आयी। उसने तेरे शत्रुओं को प्रसन्न किया कि तेरे साथ ऐसा घटा। उसने तेरे शत्रुओं की शक्ति बढ़ा दी।

18हे यरूशलेम की पुत्री परकोटे, तू अपने मन से यहोवा की टेर लगा! आसुँओं को नदी सा बहने दे! रात–दिन अपने आसुँओं को गिरने दे! तू उनको रोक मत! तू अपनी आँखों को थमने मत दे!

19जाग उठ! रात में विलाप कर! रात के हर पहर के शुरु में विलाप कर! आँसुओ में अपना मन बाहर निकाल दे जैसा वह पानी हो! अपना मन यहोवा के सामने निकाल रख! यहोवा की प्रार्थना में अपने हाथ ऊपर उठा। उससे अपनी संतानों का जीवन माँग। उससे तू उन सन्तानों का जीवन माँग ले जो भूख से बेहोश हो रहें है। वे नगर के हर कूँचे गली में बेहोश पड़ी है।

20हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर! देख कौन है वह जिसके साथ तूने ऐसा किया! तू मुझको यह प्रश्न पूछने दे: क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वह जनती है? क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वे पोसती रही है? क्या यहोवा के मन्दिर में याजक और नबियों के प्राणों को लिया जाये?

21नवयुवक और वृद्ध नगर की गलियों में धरती पर पड़े रहें। मेरी युवा स्त्रियाँ, पुरुष और युवक तलवार के धार उतारे गये थे।

हे यहोवा, तूने अपने क्रोध के दिन पर उनका वध किया है!तूने उन्हें बिना किसी करुणा के मारा है!22तूने मुझ पर घिर आने को चारों ओर से आतंक बुलाया। आतंक को तूने ऐसे बुलाया जैसे पर्व के दिन पर बुलाया हो। उस दिन जब यहोवा ने क्रोध किया था ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो बचकर भाग पाया हो अथवा उससे निकल पाया हो। जिनको मैंने बढ़ाया था और मैंने पाला–पोसा, उनको मेरे शत्रुओं ने मार डाला है।

## एक व्यक्ति द्वारा अपनी यातनाओं पर विचार

3 मैं ऐक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसने बहुतेरी यातनाएं भोगी है; यहोवा के क्रोध के तले मैंने बहुतेरी दण्ड यातनाएं भोगी है!

2यहोवा मुझको लेकर के चला और वह मुझे अन्धेरे के भीतर लाया न कि प्रकाश में।

3यहोवा ने अपना हाथ मेरे विरोध में कर दिया। ऐसा उसने बारम्बार सारे दिन किया।

4उसने मेरा मांस, मेरा चर्म नष्ट कर दिया। उसने मेरी हडिड्यों को तोड़ दिया।

5यहोवा ने मेरे विरोध में, कड़वाहट और आपदा फैलायी है। उसने मेरी चारों तरफ़ कड़वाहट और विपत्ति फैलादी।

6उसने मुझे अन्धेरे में बिठा दिया था। उसने मुझको उस व्यक्ति सा बना दिया था जो कोई बहुत दिनों पहले मर चुका हो।

7यहोवा ने मुझको भीतर बंद किया, इससे मैं बाहर आ न सका। उसने मुझ पर भारी ज़ंजीरें घेरी थीं।

8यहाँ तक कि जब मैं चिल्लाकर दुहाई देता हूँ, यहोवा मेरी विनती को नहीं सुनता है।

9उसने पत्थर से मेरी राह को मूंद दिया है। उसने मेरी राह को विषम कर दिया है।

10यहोवा उस भालू सा हुआ जो मुझ पर आक्रमण करने को तत्पर है। वह उस सिंह सा हुआ हैं जो किसी ओट में छुपा हुआ हैं।

11यहोवा ने मुझे मेरी राह से हटा दिया। उसने मेरी धज्जियाँ उड़ा दीं। उसने मुझे बर्बाद कर दिया है।

12उसने अपना धनुष तैयार किया। उसने मुझको अपने बाणों का निशाना बना दिया था।

13मेरे पेट में बाण मार दिया। मुझ पर अपने बाणों से प्रहार किया था।

14मैं अपने लोगों के बीच हंसी का पात्र बन गया। वे दिन भर मेरे गीत गा–गा कर मेरा मज़ाक बनाते है।

15यहोवा ने मुझे कड़वी बातों से भर दिया कि मैं उनको पी जाऊँ। उसने मुझको कड़वे पेयों से भरा था।

16उसने मेरे दांत पथरीली धरती पर गडा दिये। उसने मुझको मिट्‌टी में मिला दिया।

17मेरा विचार था कि मुझको शांति कभी भी नहीं मिलेगी। अच्छी भली बातों को मैं तो भूल गया था।
18स्वंय अपने आप से मैं कहने लगा था, "मुझे तो बस अब और आस नहीं है कि यहोवा कभी मुझे सहारादेगा।"

19हे यहोवा, तू मेरे दुखिया पन याद कर, और यह कि कैसा मेरा घर नहीं रहा। याद कर उस कड़वे पेय को और उस जहर को जो तूने मुझे पीने को दिया था।

20मुझको तो मेरी सारी यातनाएँ याद हैं और मैं बहुत ही दु:खी हूँ।

21किन्तु उसी समय जब मैं सोचता हूँ, तो मुझको आशा होने लगती हैं। मैं ऐसा सोचा करता हूँ:

22यहोवा के प्रेम और करुणा का तो अंत कभी नहीं होता। यहोवा की कृपाएं कभी समाप्त नहीं होती।

23हर सुबह वे नये हो जाते हैं! हे यहोवा, तेरी सच्चाई महान है!

24मैं अपने से कहा करता हूँ, "यहोवा मेरे हिस्से में है। इसी कारण से मैं आशा रखूंगा।"

25यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी बाट जोहते हैं। यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी खोज में रहा करते हैं।

26यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति चुपचाप यहोवा की प्रतिक्षा करे कि वह उसकी रक्षा करेगा।

27यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति यहोवा के जुए को धारण करे, उस समय से ही जब वह युवक हो।

28व्यक्ति को चाहिये कि वह अकेला चुप बैठे ही रहे जब यहोवा अपने जुए को उस पर धरता है।

29उस व्यक्ति को चाहिये कि यहोवा के सामने वह दण्डवत् प्रणाम करे। सम्भव है कि कोई आस बची हो।

30उस व्यक्ति को चाहिये कि वह अपना गाल कर दे, उस व्यक्ति के सामने जो उस पर प्रहार करता हो। उस व्यक्ति को चाहिये कि वह अपमान झेलने को तत्पर रहे।

31उस व्यक्ति को चाहिये वह याद रखे कि यहोवा किसी को भी सदा–सदा के लिये नहीं बिसराता।

32यहोवा दण्ड देते हुए भी अपनी कृपा बनाये रखता है। वह अपने प्रेम और दया के कारण अपनी कृपा रखता है।

33यहोवा कभी भी नहीं चाहता कि लोगों को दण्ड दे। उसे नहीं भाता कि लोगों को दु:खी करे।

34यहोवा को यह बातें नहीं भाती है: उसको नहीं भाता कि कोई व्यक्ति अपने पैरों के तले धरती के सभी बंदियों को कुचल डाले।

35उसको नहीं भाता है कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को छले। कुछ लोग उसके मुकदमें में परम प्रधान परमेश्वर के सामने ही ऐसा किया करते है।

36उसको नहीं भाता कि कोई व्यक्ति अदालत में किसी से छल करे। यहोवा को इन में से कोई भी बात नहीं भाती है।

37जब तक स्वयं यहोवा ही किसी बात के होने की आज्ञा नहीं देता, तब तक ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है कि कोई बात कहे और उसे पूरा करवा ले।

38बुरी–भली बातें सभी परम प्रधान परमेश्वर के मुख से ही आती हैं।

39कोई जीवित व्यक्ति शिकायत कर नहीं सकता जब यहोवा उस ही के पापों का दण्ड उसे देता है।

40आओ, हम अपने कर्मों को परखें और देखें, फिर यहोवा के शरण में लौट आयें।

41आओ, स्वर्ग के परमेश्वर के लिये हम हाथ उठायें और अपना मन ऊँचा करें।

42आओ, हम उससे कहें, "हमने पाप किये हैं और हम जिद्दी बने रहे और इसलिये तूने हमको क्षमा नहीं किया।

43तूने क्रोध से अपने को ढांप लिया, हमारा पीछा तू
करता रहा है, तूने हमें निर्दयतापूर्वक मार दिया! 44तूने
अपने को बादल से ढांप लिया। तूने ऐसा इसलिये किया
था कि कोई भी विनती तुझ तक पहुँचे ही नहीं।

45तूने हमको दूसरे देशों के लिये ऐसा बनाया जैसा कूड़ा कर्कट हुआ करता हैं।

46हमारे सभी शत्रु हमसे क्रोध भरे बोलते हैं।

47हम भयभीत हुए हैं, हम गर्त में गिर गये हैं। हम बुरी तरह क्षतिग्रस्त है! हम टूट चुके हैं!"

48मेरी आँखों से आँसुओं की नदियां बही! मैं विलाप करता हूँ क्योंकि मेरे लोगों का विनाश हुआ है!

49मेरे नयन बिना रूके बहते रहेंगे! मैं सदा विलाप करता रहूँगा!

50हे यहोवा, मैं तब तक विलाप करता रहूँगा जब तक तू दृष्टि न करे और हम को देखे! मैं तब तक विलाप ही करता रहूंगा जब तक तू स्वर्ग से हम पर दृष्टि न करे!

51जब मैं देखा करता हूँ जो कुछ मेरी नगरी की युवतियों के साथ घटा तब मेरे नयन मुझको दु:खी करतेहैं।

52जो लोग व्यर्थ में ही मेरे शत्रु बने हैं, वे घूमते हैं मेरी शिकार की फिराक में, मानों मैं कोई चिड़िया हूँ।

53जीते जी उन्होंने मुझको घड़े में फेंका और मुझ पर पत्थर लुढ़काए थे।

54मेरे सिर पर से पानी गुज़र गया था। मैंने मन में कहाँ, "मेरा नाश हुआ।"

55हे यहोवा, मैंने तेरा नाम पुकारा। उस गर्त के तल से मैंने तेरा नाम पुकारा।

56तूने मेरी आवाज़ को सुना। तूने कान नहीं मूंद
लिये। तूने बचाने से और मेरी रक्षा करने से नकारा
नहीं। 57जब मैंने तेरी दुहाई दी, उसी दिन तू मेरे पास आ
गया था। तूने मुझ से कहा था, "भयभीत मत हो।"

58हे यहोवा, मेरे अभियोग में तूने मेरा पक्ष लिया। मेरे लिये तू मेरा प्राण वापस ले आया।

59हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियां देखी हैं, अब मेरे लिये तू मेरा न्याय कर।

60तूने स्वंय देखा है कि शत्रुओं ने मेरे साथ कितना अन्याय किया। तूने स्वंय देखा है उन सारे षड़यंत्रों को जो उन्होंने मुझ से बदला लेने को मेरे विरोध में रचे थे।

61हे यहोवा, तूने सुना है कि वे मेरा अपमान कैसे करते हैं। तूने सुना है उन षड़यंत्रों को जो उन्होंने मेरे विरोध में रचाये।

62मेरे शत्रुओं के वचन और विचार सदा ही मेरे विरुद्ध रहे।

63देखो यहोवा, चाहे वे बैठे हों, चाहे वे खड़े हों, कैसे वे मेरी हंसी उड़ाते हैं!

64हे यहोवा, उनके साथ वैसा ही कर जैसा उनके
साथ करना चाहिये! उनके कर्मों का फल तू उनको दे
दे! 65उनका मन हठीला कर दे! फिर अपना अभिशाप
उन पर डाल दे!

66क्रोध में भर कर तू उनका पीछा कर! उन्हें बर्बाद कर दे! हे यहोवा, आकाश के नीचे से तू उन्हें समाप्त कर दे!

## यरूशलेम पर हमले का आतंक

4देखों, किस तरह सोना चमक रहित हो गया। देखों, सारा सोना कैसे खोटा हो गया। चारों ओर हीरे-जवाहरात बिखरे पड़े हैं। हर गली के सिर पर ये रत्न फैले हैं।

2सिय्योन के निवासी बहुत मूल्यवान थे, जिनका मूल्य सोने की तोल में तुलना था। किन्तु अब उनके साथ शत्रु ऐसे बर्ताव करते हैं जैसे वे मिट्टी के पुराने घड़े हों। शत्रु उनके साथ ऐसा बर्ताव करता है जैसे वे कुम्हार के बनाये मिट्टी के पात्र हों।

3यहाँ तक कि गीदड़ी भी अपने बच्चे को थन देती है, वह अपने बच्चे को दूध पीने देती है। किन्तु मेरे लोग निर्दय हो गये हैं। वह ऐसे हो गये जैसे मरुभूमि में निवासी-शुतुर्मुर्ग।

4प्यास के मारे आबोध शिशुओं की जीभ तालू से चिपक रही है। ये छोटे बच्चे रोटी को तरसते हैं। किन्तु कोई भी उन्हें कुछ भी खाने को लिये देता नहीं।

5ऐसे लोग जो स्वादिष्ट भोजन खाया करते थे, आज भूख से गलियों में मर रहें हैं। ऐसे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हुए पले बढ़े थे, अब कूड़े के ढेरों पर बीनते फिरते हैं।

6मेरे लोगों का पाप बहुत बड़ा था। उनका पाप सदोम और अमोरा के पापों से बड़ा पाप था। सदोम और अमोरा को अचानक नष्ट किया गया। उनके विनाश में किसी भी मनुष्य का हाथ नहीं था। यह तो परमेश्वर ने किया था।

7यहूदा के लोग जो परमेश्वर को समर्पित थे, वे बर्फ से उजले थे, दूध से धुले थे। उनकी कायाएं मूंग से अधिक लाल थीं। उनकी दाढ़ियाँ नीलम से श्यामल थी।

8किन्तु उनके मुख अब धुएं से काले हो गये हैं। यहाँ तक कि गलियों में उनको कोई नहीं पहचानता था। उनकी ठठरी पर अब झुर्रियां पड़ रही है। उनका चर्म लकड़ी सा कड़ा हो गया है।

9ऐसे लोग जिन्हें तलवार के घाट उतारे गये उन से कहीं भाग्यवान थे जो लोग भूख-मरी के मारे मरे। भूख के सताये लोग बहुत ही दु:खी थे, वे बहुत व्याकुल थे। वे मरे क्योंकि खेतों का दिया हुआ खाने को उनके पास नहीं था।

10उन दिनों ऐसी स्त्रियों ने भी जो बहुत अच्छी हुआ करती थी, अपनी ही बच्चों के मांस को पकाया था। वे बच्चे अपनी ही माँओं का आहार बने। ऐसा तब हुआ था जब मेरे लोगों का विनाश हुआ था।

11यहोवा ने अपने सब क्रोध का प्रयोग किया; अपना समूचा क्रोध उसने उंडेल दिया। सिय्योन में जिसने आग भड़कायी, सिय्योन की नीवों को नीचे तक जला दियाथा।

12जो कुछ घटा था, धरती के किसी भी राजा को उसका विश्वास नहीं था। जो कुछ घटा था, धरती के किसी भी लोगों को उसका विश्वास नहीं था। यरूशलेम के द्वारों से होकर कोई भी शत्रु भीतर आ सकता है, इसका किसी को भी विश्वास नहीं था।

13किन्तु ऐसा ही हुआ, क्योंकि यरूशलेम के नबियों
ने पाप किये थे। ऐसा हुआ क्योंकि यरूशलेम के याजक
बुरे काम किया करते थे। यरूशलेम के नगर में वे
बहुत खून बहाया करते थे; वे नेक लोगों का खून
बहाया करते थे।
14याजक और नबी गलियों में अंधे से घुमते थे। खून
से वे गंदे हो गये थे। यहाँ तक कि कोई भी उनका वस्त्र
नहीं छूता था क्योंकि वे गंदे थे।
15लोग चिल्लाकर कहते थे, "दूर हटो! दूर हटो! तुम
अस्वच्छ हो, हमको मत छूओ।" वे लोग इधर–उधर यूं
ही फिरा करते थे। उनके पास कोई घर नहीं था। दूसरी
जातियों के लोग कहते थे, "हम नहीं चाहते कि वे
हमारे पास रहें।"
16वे लोग स्वंय यहोवा के द्वारा ही नष्ट किये गये थे।
उसने उनकी ओर फिर कभी नहीं देखा। उसने याजकों
को आदर नहीं दिया। यहूदा के मुखिया लोगों के साथ
वह मित्रता से नहीं रहा।
17सहायता पाने की बाट जोहते–जोहते अपनी आँखों
ने काम करना बंद किया, और अब हमारी आँखें थक
गई हैं। किन्तु कोई भी सहायता नहीं आई। हम प्रतीक्षा
करते रहे कि कोई ऐसी जाति आये जो हमको बचा ले।
हम अपनी निगरानी बुर्ज से देखते रह गये। किन्तु किसी
ने भी हम को बचाया नहीं।
18हर समय दुशमन हमारे पीछे पड़े रहे यहाँ तक कि
हम बाहर गली में भी निकल नहीं पाये। हमारा अंत
निकट आया। हमारा समय पूरा हो चुका था। हमारा
अंत आ गया! 19वे लोग जो हमारे पीछे पड़े थे, उनकी
गती आकाश में उकाब की गती से तीव्र थी। उन लोगों
ने पहाड़ों के भीतर हमारा पीछा किया। वे हमको
पकड़ने को मरुभूमि में लुके–छिपे थे।
20वह राजा जो हमारी नाकों के भीतर हमारा प्राण
था, गर्त में फसा लिया गया था; वह राजा ऐसा व्यक्ति था
जिसे यहोवा ने स्वयं चुना था। राजा का बारे में हमने
कहा था, "उसकी छत्र छाया में हम जीवित रहेंगे, उसकी
छाया में हम जातियों के बीच जीवित रहेंगे।"
21एदोम के लोगों, प्रसन्न रहो और आनन्दित रहो! हे
ऊज के निवासियों, प्रसन्न रहो! किन्तु सदा याद रखो,
तुम्हारे पास भी यहोवा के क्रोध का प्याला आयेगा। जब
तुम उसे पिओगे, धुत्त हो जाओगे और स्वंय को नंगा
कर डालोगे। 22सिय्योन, तेरा दण्ड पूरा हुआ। अब फिर
से तू कभी बंधन में नहीं पड़ोगी। किन्तु हे एदोम के
लोगों, यहोवा तुम्हारे पापों का दण्ड देगा। तुम्हारे पापों
को वह उघाड़ देगा।

## यहोवा से विनती:

5 हे यहोवा, हमारे साथ जो घटा हैं, याद रख। हे
यहोवा, हमारे तिरस्कार को देख।
2हमारी धरती परायों के हाथों में दे दी गयी। हमारे
घर परदेसियों के हाथों में दिये गये।
3हम अनाथ हो गये। हमारा कोई पिता नहीं। हमारी
माताएं विधवा सी हो गयी हैं।
4पानी पीने तक हमको मोल देना पड़ता है, इंधन की
लकड़ी तक खरीदनी पड़ती हैं।
5अपने कन्धों पर हमें जुए का बोझ उठाना पड़ता है।
हम थक कर चूर होते हैं किन्तु विश्राम तनिक हमको
नहीं मिलता।
6हमने मिस्र के साथ एक वाचा किया; अश्शूर के
साथ भी हमने एक वाचा किया था कि पर्याप्त भोजन
मिले। 7हमारे पूर्वजों ने तेरे विरोध में पाप किये थे।
आज वे मर चुके हैं। अब वे विपत्तियां भोग रहे हैं।
8हमारे दास ही स्वामी बने हैं। यहां कोई ऐसा व्यक्ति
नहीं जो हमको उनसे बचा ले।
9बस भोजन पाने को हमें अपना जीवन दांव पर
लगाना पड़ता है। मरुभूमि में ऐसे लोगों के कारण,
जिनके पास तलवार हैं हमें अपना जीवन दांव पर
लगाना पड़ता है।
10हमारी खाल तन्दूर सी तप रही है, हमारी खाल तप
रही उस भूख के कारण जो हमको लगी हैं।
11सिय्योन की स्त्रियों के साथ कुकर्म किये गये हैं।
यहूदा की नगरियों की कुमारियों के साथ कुकर्म किये
गये हैं।
12हमारे राजकुमार फांसी पर चढ़ाये गये; उन्होंने
हमारे अग्रजों का आदर नहीं किया।
13हमारे वे शत्रुओं ने हमारे युवा पुरुषों के साथ
चक्की में आटा पिसवाया। हमारे युवा पुरुष लकड़ी के
बोझ तले ठोकर खाते हुये गिरे।
14हमारे बुज़ुर्ग अब नगर के द्वारों पर बैठा नहीं
करते। हमारे युवक अब संगीत में भाग नहीं लेते।
15हमारे मन में अब कोई खुशी नहीं है। हमारा हर्ष
मरे हुए लोगों के विलाप में बदल गया है।
16हमारा मुकुट हमारे सिर से गिर गया है। हमारी सब
बातें बिगड़ गयी हैं क्योंकि हमने पाप किये थे।
17इसलिये हमारे मन रोगी हुए है; इन ही बातों से
हमारे आँखें मद्धिम हुई है। 18सिय्योन का पर्वत विरान
हो गया है। सिय्योन के पहाड़ पर अब सियार घूमते है।
19किन्तु हे यहोवा, तेरा राज्य तो अमर हैं। तेरा महिमापूर्ण
सिंहासन सदा–सदा बना रहता है।
20हे यहोवा, ऐसा लगता है जैसे तू हमको सदा के लिये
भूल गया है। ऐसा लगता है जैसे इतने समय के लिये तूने
हमें अकेला छोड़ दिया है। 21हे यहोवा, हमको तू अपनी
ओर मोड़ ले। हम प्रसन्नता से तेरे पास लौट आयेंगे;
हमारे दिन फेर दे जैसे वह पहले थे।
22क्या तूने हमें पूरी तरह बिसरा दिया? तू हम से
बहुत क्रोधित रहा है।